

हिंदी

कक्षा IX

अध्याय 7- दोहे

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

- (क) प्रेम का धागा टूटने पर पहले की भाँति क्यों नहीं हो पाता?
- (ख) हमें अपना दुख दूसरों पर क्यों नहीं प्रकट करना चाहिए? अपने मन की व्यथा दूसरों से कहने पर उनका व्यवहार कैसा हो जाता है?
- (ग) रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को धन्य क्यों कहा है?
- (घ) एक को साधने से सब कैसे सध जाता है?
- (ङ) जलहीन कमल की रक्षा सूर्य भी क्यों नहीं कर पाता?
- (च) अवध नरेश को चित्रकूट क्यों जाना पड़ा?
- (छ) “नट” किस कला में सिद्ध होने के कारण ऊपर चढ़ जाता है?
- (ज) “मोती, मानुष, चून” के संदर्भ में पानी के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

(क) प्रेम आपसी लगाव, आकर्षण और विश्वास के कारण होता है। यदि एक बार यह लगाव और विश्वास टूट जाए तो फिर उसमें पहले जैसा भाव नहीं रहता। एक दरार मन में आ ही जाती है। ठीक वैसे जैसे कि धागा टूटने पर जुड़ नहीं पाता। यदि उसे जोड़ा जाए तो गाँठ पड़ ही जाती है।

(ख) हमें अपना दुःख दूसरों पर प्रकट नहीं करना चाहिए। कारण यह है कि लोग दुःख की बात सुनकर प्रसन्न ही होते हैं। वे उसे बाँटने को तैयार नहीं होते। उनका व्यवहार मित्रों जैसा नहीं, अपितु बेगानों जैसा हो जाता है।

(ग) रहीम ने सागर को धन्य इसलिए नहीं कहा क्योंकि उसका जल खारा होता है। वह किसी की प्यास नहीं बुझा पाता। उसकी तुलना में पंक का जल धन्य होता है क्योंकि उसे पीकर कीट-पतंगे अपनी प्यास बुझा लेते हैं।

(घ) एक परमात्मा को साधने से अन्य सारे काम अपने-आप सध जाते हैं। कारण यह है कि परमात्मा ही सबको मूल है। जैसे मूल अर्थात् जड़ को सींचने से फल-फूल अपने-आप उग आते हैं, उसी प्रकार परमात्मा को साधने से अन्य सब कार्य कुशलतापूर्वक संपन्न हो जाते हैं।

(ङ) कमल की मूल संपत्ति है-जल। उसी के होने से कमल जीवित रहता है। यदि वह न रहे तो सूर्य भी कमल को जीवन नहीं दे सकता। सूर्य बाहरी शक्ति है। जल भीतरी शक्ति है। इसी भीतरी शक्ति से ही जीवन चलता है।

अध्याय 7- दोहे

(च) अवध नरेश अर्थात् श्रीराम को चित्रकूट इसलिए जाना पड़ा क्योंकि उन्हें माता-पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए चौदह वर्षों तक वनवास भोगना था। उसी वनवास के दौरान उन्हें चित्रकूट जैसे रमणीय वन में रुकने का अवसर मिला।

(छ) नट स्वयं को समेटकर, सिकोड़कर तथा संतुलित करने के कारण कुंडली में से निकल जाता है और तार पर चढ़ जाता है।

(ज) 'मोती' के संदर्भ में 'पानी' का अर्थ है-चमक। रहीम का कहना है कि चमक के बिना मोती का कोई मूल्य नहीं होता।

'मानुष' के संदर्भ में 'पानी' का अर्थ है-आत्म-सम्मान। रहीम का कथन है कि आत्म-सम्मान के बिना मनुष्य का कोई मूल्य नहीं होता।

'चून' के संदर्भ में पानी का महत्त्व सर्वोपरि है। बिना पानी के आटे की रोटी नहीं बनाई जा सकती। इसलिए वहाँ पानी का होना अनिवार्य है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।

(ख) सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।

(ग) रहिमन मूलहिं सचिबो, फूलै फलै अघाय।

(घ) दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं।

(ङ) नाद :रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत

(च) जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि।

(छ) पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।

उत्तर-

(क) भाव यह है कि प्रेम का बंधन अत्यंत नाजुक होता है। इसमें कटुता आने पर मन की मलिनता कहीं न कहीं बनी ही रह जाती है। प्रेम का यह बंधन टूटने पर सरलता से नहीं जुड़ता है। यदि जुड़ता भी है तो इसमें गाँठ पड़ जाती है।

(ख) भाव यह है कि जब हम सहानुभूति और मुद्रदै पाने की आशा से अपना दुख दूसरों को सुनाते हैं तो लोग सहानुभूति दर्शाने और मदद करने की अपेक्षा हमारा मजाक उड़ाना शुरू कर देते हैं। अतः दूसरों को अपना दुख बताने से बचना चाहिए।

अध्याय 7- दोहे

(ग) भाव यह है कि किसी पेड़ से फल-फूल पाने के लिए उसके तने, पत्तियों और शाखाओं को पानी देने के बजाय उसकी जड़ों को पानी देने से ही वह खूब हरा-भरा होता है और फलता-फूलता है। इसी तरह एक समय में एक ही काम करने पर उसमें सफलता मिलती है।

(घ) भाव यह है कि किसी वस्तु का आकार ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं होता है, महत्व होता है उसमें निहित अर्थ का। दोहे का महत्व इसलिए है कि वह कम शब्दों में गूढ़ अर्थ समेटे रहता है।

(ङ) भाव यह है कि प्रसन्न होने पर मनुष्य ही नहीं, पशु भी अपना तने तक दे देते हैं परंतु कुछ मनुष्य पशुओं से भी बढ़कर पशु होते हैं। वे धन के लिए अपना सब कुछ दे देते हैं।

(च) भाव यह है कि वस्तु की महत्ता उसके आकार के कारण नहीं, बल्कि उसकी उपयोगिता के कारण होती है। छोटी से छोटी वस्तु का भी अपना महत्व होता है, क्योंकि जो काम सुई कर सकती है उसे तलवार नहीं कर सकती है।

(छ) भाव यह है कि मनुष्य को सदैव पानी बचाकर रखना चाहिए क्योंकि पानी (चमक) जाने पर मोती साधारण पत्थर, सी रह जाती है, पानी (इज्जत) जाने पर मनुष्य स्वयं को अपमानित-सा महसूस करता है और पानी (जल) न रहने पर आटे से रोटियाँ नहीं बनाई जा सकती हैं।

प्रश्न 3. निम्नलिखित भाव को पाठ में किन पंक्तियों द्वारा अभिव्यक्त किया गया है-

1. जिस पर विपदा पड़ती है वही इस देश में आता है।
2. कोई लाख कोशिश करे पर बिगड़ी बात फिर बन नहीं सकती।
3. पानी के बिना सब सूना है अतः पानी अवश्य रखना चाहिए।

उत्तर-

1. जा पर विपदा पड़त है, सो आवत यह देस।
2. बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
3. रहि मन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।

अध्याय 7- दोहे

प्रश्न 4. उदाहरण के आधार पर पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए-

उदाहरण : कोय – कोई, जे – जो

1. ज्यों –
2. कछु –
3. नहीं –
4. कोय –
5. धनि –
6. आखर –
7. जिय –
8. थोरे –
9. होय –
10. माखन –
11. तरवारि –
12. सचिबो –
13. मूलहिं –
14. पिअत –
15. पियासो –
16. बिगरी –
17. आवे –
18. सहाय –
19. ऊबरै –
20. बिनु –
21. बिया –
22. अठिलैहैं –
23. परिजाय –

उत्तर

1. ज्यों – जैसे

2. कुछ – कछु
3. नहीं – नहीं
4. कोय – कोई
5. धनि – धनी
6. आखर – अक्षर
7. जिय – जी
8. थोरे – थोडे
9. होय – होना
10. माखन – मक्खन
11. तरवारि – तलवार
12. सींचिबो – सिंचाई करना
13. मूलहिं – मूल
14. पिअत – पीना
15. पियासो – प्यासा
16. बिगरी – बिगड़ी
17. आवे – आए
18. सहाय – सहायक
19. ऊबरै – उबरना
20. बिनु – बिना
21. बिथा – व्यथा
22. अठिलैहैं – अठखेलियाँ
23. परिजाय – पड़ जाए

योग्यता-विस्तार

प्रश्न 1. 'सुई की जगह तलवार काम नहीं आती' तथा 'बिन पानी सब सून' इन विषयों पर कक्षा में परिचर्चा आयोजित कीजिए।

उत्तर-छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 2. चित्रकूट' किस राज्य में स्थित है, जानकारी प्राप्त कीजिए।

उत्तर-चित्रकूट' उत्तर प्रदेश राज्य के दक्षिणी छोर पर स्थित बाँदा जनपद में स्थित है। अयोध्या से लक्ष्मण और सीता के साथ वनवास जाते समय राम ने यहाँ कुछ दिन बिताया था। तब से इसकी गणना तीर्थ स्थान के रूप में की जाती है।

परियोजना कार्य

प्रश्न 1. नीति संबंधी अन्य कवियों के दोहे/कविता एकत्र कीजिए और उन दोहों/कविताओं को चार्ट पर लिखकर भित्ति पत्रिका पर लगाइए।

उत्तर-छात्र अन्य कवियों के नीति संबंधी दोहे/कविताओं को चार्ट पर लिखकर भित्ति पत्रिका स्वयं तैयार करें।

अन्य पाठेतर हल प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'मिले गाँठ परिजाय'-ऐसा रहीम ने किस संदर्भ में कहा है और क्यों?

उत्तर-'मिले गाँठ परिजाय' ऐसा रहीम ने 'प्रेम संबंधों के बारे में' कहा है, क्योंकि प्रेम संबंधों की डोर बड़ी नाजुक होती है। एक बार टूट जाने पर जब इसे जोड़ा जाता है तो मन में मलिनता और पिछली बातों की कड़वाहट होने के कारण एक गाँठ-सी बनी रहती है।

प्रश्न 2. बिगरी बात क्यों नहीं बन पाती है? इसके लिए कवि ने क्या दृष्टांत दिया है?

उत्तर-जब मन में मतभेद और कड़वाहट उत्पन्न होती है, तब बात बिगड़ जाती है और यह बात पहले-सी नहीं हो पाती है। इसके लिए रहीम ने यह दृष्टांत दिया है कि जिस तरह दूध फट जाने पर उससे मक्खन नहीं निकाला जा सकता है, उसी प्रकार बात को पुनः पहले जैसा नहीं बनाया जा सकता है।

प्रश्न 3. कुछ मनुष्य पशुओं से भी हीन होते हैं। पठित दोहे के आधार पर हिरन के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-हिरन शिकारी की आवाज़ सुनकर उसे दूसरे हिरनों की आवाज़ समझ बैठता है और खुश हो जाता है। वह अपनी सुधि बुधि खोकर उस आवाज़ की ओर आकर अपना तन दे देता है परंतु मनुष्य खुश होकर भी दूसरों को कुछ नहीं देता है। इस तरह कुछ मनुष्य पशुओं से भी हीन होते हैं।

प्रश्न 4. रहीम का मानना है कि व्यक्ति को अपनी पीड़ा छिपाकर रखनी चाहिए, ऐसा क्यों?

उत्तर-रहीम का मानना है कि व्यक्ति को अपने मन की पीड़ा छिपाकर रखनी चाहिए, क्योंकि सहानुभूति और मदद पाने की अपेक्षा से हम अपनी पीड़ा दूसरों के सामने प्रकट तो कर देते हैं परंतु लोग हमारी मदद करने के बजाय हँसी उड़ाते हैं।

प्रश्न 5. 'रहिमन देखि बड़ेन को ... दोहे में मनुष्य को क्या संदेश दिया गया है? इसके लिए उन्होंने किस उदाहरण का सहारा लिया है?

उत्तर-'रहिमन देखि बड़ेन को ...' दोहे में मनुष्य को यह संदेश दिया गया है कि बड़े लोगों को साथ पाकर छोटे-लोगों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। छोटे लोगों का काम बड़े लोग उसी प्रकार नहीं कर सकते हैं जिस प्रकार सुई का काम तलवार नहीं कर सकती है।

प्रश्न 6. 'अवध नरेश' कहकर किसकी ओर संकेत किया गया है? उन्हें चित्रकूट में शरण क्यों लेनी पड़ी?

उत्तर-'अवध नरेश' कहकर श्रीराम की ओर संकेत किया गया है। उन्हें चित्रकूट में इसलिए शरण लेनी पड़ी, क्योंकि वे अपने पिता के वचनों के पालन के लिए लक्ष्मण और सीता के साथ वनवास जा रहे थे। वनवास को कुछ समय उन्होंने चित्रकूट में बिताया था।

प्रश्न 6. रहीम ने मूल को सींचने की सीख किस संदर्भ में दी है और क्यों?

उत्तर-कवि रहीम ने मनुष्य को यह सीख दी है कि वह तना, पत्तियाँ, शाखा, फूल आदि को पानी देने के बजाय उसकी जड़ों को ही पानी दे। इससे पौधा खूब फलता-फूलता है। यह सीख कवि ने एक बार में एक ही काम पर मन लगाकर परिश्रम करने के संदर्भ में दी है।

प्रश्न 7. नट किस कला में पारंगत होता है? रहीम ने उसका उदाहरण किसलिए दिया है?

उत्तर-नट कुंडली मारकर अपने शरीर को छोटा बनाने की कला में पारंगत होता है। रहीम ने उसका उदाहरण दोहे की विशेषता बताने के संदर्भ में दिया है। दोहा अपने कम शब्दों के कारण आकार में छोटा दिखाई देता है परंतु वह अपने में गूढ़ अर्थ छिपाए होता है।

प्रश्न 8. व्यक्ति को अपने पास संपत्ति क्यों बचाए रखना चाहिए? ऐसा कवि ने किसके उदाहरण द्वारा कहा है?

उत्तर-व्यक्ति को अपने पास संपत्ति इसलिए बचाए रखना चाहिए क्योंकि उसकी अपनी संपत्ति ही विपत्ति में उसके काम आती है। इसके अभाव में अपना कहलाने वाले भी काम नहीं आते हैं। कवि ने इसके लिए जलहीन कमल और सूर्य का उदाहरण दिया है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. आज की परिस्थितियों में रहीम के दोहे कितने प्रासंगिक हैं? किन्हीं दो उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-रहीम द्वारा रचित दोहे नीति और आदर्श की शिक्षा देने के अलावा मनुष्य को करणीय और अकरणीय बातों का ज्ञान देते हुए कर्तव्यरत होने की प्रेरणा देते हैं। समाज को इन बातों की अपेक्षा इन दोहों के रचनाकाल में जितनी थी, उतनी ही। आज भी है। आज भी दूसरों का दुख सुनकर समाज उसे हँसी का पात्र समझता है। इसी प्रकार अपने पास धन न होने पर व्यक्ति की सहायता कोई नहीं करता है। ये तथ्य पहले भी सत्य थे और आज भी सत्य हैं। अतः रहीम के दोहे आज भी पूर्णतया प्रासंगिक हैं।

प्रश्न 2. रहीम ने अपने दोहों में छोटी वस्तुओं का महत्त्व प्रतिपादित किया है। इसे सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-कवि रहीम को लोक जीवन का गहरा अनुभव था। वे इसी अनुभव के कारण जीवन के लिए उपयोगी वस्तुओं की सूक्ष्म परख रखते थे। उन्होंने अपने दोहे में मनुष्य को सीख दी है कि वह बड़े लोगों का साथ पाकर छोटे लोगों की उपेक्षा और तिरस्कार न करें, क्योंकि छोटे लोगों द्वारा जो कार्य किया जा सकता है, वह बड़े लोग

उसी प्रकार नहीं कर सकते हैं; जैसे सुई की सहायता से मनुष्य जो काम करता है उसे तलवार की सहायता से नहीं कर सकता है। सुई और तलवार दोनों का ही अपनी-अपनी जगह महत्त्व है।

प्रश्न 3. पठित दोहे के आधार पर बताइए कि आप तालाब के जल को श्रेष्ठ मानते हैं या सागर के जल को और क्यों?

उत्तर- रहीम ने अपने दोहे में सागर में स्थित विशाल मात्रा वाले जल और तालाब में स्थित लघु मात्रा में कीचड़ वाले जल का वर्णन किया है। इन दोनों में मैं भी तालाब वाले पानी को श्रेष्ठ मानता हूँ। यद्यपि समुद्र में अथाह जल होता है, परंतु उसके किनारे जाकर भी जीव-जंतु प्यासे के प्यासे लौट आते हैं। दूसरी ओर तालाब में स्थित कीचड़युक्त पानी विभिन्न प्राणियों की प्यास बुझाने के काम आता है। अपनी उपयोगिता के कारण यह पंकिल जल सागर के खारे जल से श्रेष्ठ है।

रहीम के दोहे पाठ की व्याख्या

दोहा

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय॥

शब्दार्थ

चटकाय – झटके से

परि जाय – पड़ जाती है

व्याख्या – रहीम जी कहते हैं कि प्रेम का बंधन किसी धागे के समान होता है, जिसे कभी भी झटके से नहीं तोड़ना चाहिए बल्कि उसकी हिफाजत करनी चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रेम का बंधन बहुत नाजुक होता है, उसे कभी भी बिना किसी मज़बूत कारण के नहीं तोड़ना चाहिए। क्योंकि जब कोई धागा एक बार टूट जाता है तो फिर उसे जोड़ा नहीं जा सकता। टूटे हुए धागे को जोड़ने की कोशिश में उस धागे में गाँठ पड़ जाती है। उसी प्रकार किसी से रिश्ता जब एक बार टूट जाता है तो फिर उस रिश्ते को दोबारा पहले की तरह जोड़ा नहीं जा सकता।

दोहा

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहें लोग सब, बाँटि न लैहै कोय॥

शब्दार्थ

निज – अपने

बिथा – दर्द

अठिलैहैं – मज़ाक उड़ाना

बाँटि – बाँटना

कोय – कोई

व्याख्या – रहीम जी कहते हैं कि अपने मन की पीड़ा या दर्द को दूसरों से छुपा कर ही रखना चाहिए। क्योंकि जब आपका दर्द किसी अन्य व्यक्ति को पता चलता है तो वे लोग उसका मज़ाक ही उड़ाते हैं। कोई भी आपके दर्द को बाँट नहीं सकता। अर्थात् कोई भी व्यक्ति आपके दर्द को कम नहीं कर सकता।

दोहा

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।

रहिमन मूलहिं सीचिबो, फूलै फलै अघाय॥

शब्दार्थ

मूलहिं – जड़ में

सीचिबो – सिंचाई करना

अघाय – तृप्त

व्याख्या – रहीम जी कहते हैं कि एक बार में केवल एक कार्य ही करना चाहिए। क्योंकि एक काम के पूरा होने से कई और काम अपने आप पूरे हो जाते हैं। यदि एक ही साथ आप कई लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश करेंगे तो कुछ भी हाथ नहीं आता। क्योंकि आप एक साथ बहुत कार्यों में अपना शत-प्रतिशत नहीं दे सकते। रहीम कहते हैं कि यह वैसे ही है जैसे किसी पौधे में फूल और फल तभी आते हैं जब उस पौधे की जड़ में उसे तृप्त कर देने जितना पानी डाला जाता है। अर्थात् जब पौधे में पर्याप्त पानी डाला जाएगा तभी पौधे में फल और फूल आएँगे।

दोहा

चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध-नरेस।

जा पर बिपदा पड़त है, सो आवत यह देस॥

शब्दार्थ –

अवध – रहने लायक न होना

बिपदा – विपत्ति

व्याख्या – रहीम जी कहते हैं कि जब राम को बनवास मिला था तो वे चित्रकूट में रहने गये थे। रहीम यह भी कहते हैं कि चित्रकूट बहुत घना व अँधेरा वन होने के कारण रहने लायक जगह नहीं थी। परन्तु रहीम कहते हैं कि ऐसी जगह पर वही रहने जाता है जिस पर कोई भारी विपत्ति आती है। कहने का अभिप्राय यह है कि विपत्ति में व्यक्ति कोई भी कठिन-से-कठिन काम कर लेता है।

दोहा

दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं।

ज्यों रहीम नट कुंडली, सिमिटि कूदि चढ़ि जाहिं॥

शब्दार्थ

अरथ – अर्थ

आखर- अक्षर, शब्द

थोरे – थोड़े, कम

व्याख्या – रहीम जी का कहना है कि उनके दोहों में भले ही कम अक्षर या शब्द हैं, परन्तु उनके अर्थ बड़े ही गहरे और बहुत कुछ कह देने में समर्थ हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे कोई नट अपने करतब के दौरान अपने बड़े शरीर को सिमटा कर कुंडली मार लेने के बाद छोटा लगने लगने लगता है। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी के आकार को देख कर उसकी प्रतिभा का अंदाज़ा नहीं लगाना चाहिए।

दोहा

धनि रहीम जल पंक को लघु जिय पियत अघाय।

उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिआसो जाय॥

शब्दार्थ –

धनि – धन्य

पंक – कीचड़

लघु – छोटा

उदधि – सागर

पिआसो – प्यासा

व्याख्या – रहीम जी कहते हैं कि कीचड़ में पाया जाने वाला वह थोड़ा सा पानी ही धन्य है क्योंकि उस पानी से न जाने कितने छोटे-छोटे जीवों की प्यास बुझती है। लेकिन वह सागर का जल बहुत अधिक मात्रा में होते हुए भी

व्यर्थ होता है क्योंकि उस जल से कोई भी जीव अपनी प्यास नहीं बुझा पता। कहने का तात्पर्य यह है कि बड़ा होने का कोई अर्थ नहीं रह जाता यदि आप किसी की सहायता न कर सकें।

दोहा

नाद रीझि तन देत मृग, नर धन देत समेत।

ते रहीम पशु से अधिक, रीझेहु कछु न देत ॥

शब्दार्थ –

नाद – संगीत की ध्वनि

रीझि – मोहित हो कर, खुश हो कर

व्याख्या – रहीम जी कहते हैं कि जिस प्रकार हिरण किसी के संगीत की ध्वनि से खुश होकर अपना शरीर न्योछावर कर देता है अर्थात् अपने शरीर को उसे सौंप देता है। इसी तरह से कुछ लोग दूसरे के प्रेम से खुश होकर अपना धन इत्यादि सब कुछ उन्हें दे देते हैं। लेकिन रहीम कहते हैं कि कुछ लोग पशु से भी बदतर होते हैं जो दूसरों से तो बहुत कुछ ले लेते हैं लेकिन बदले में कुछ भी नहीं देते। कहने का अभिप्राय यह है कि यदि कोई आपको कुछ दे रहा है तो आपका भी फ़र्ज बनता है कि आप उसे बदले में कुछ न कुछ दें।

दोहा

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।

रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय ॥

शब्दार्थ

बिगरी – बिगड़ी

फाटे दूध – फटा हुआ दूध

मथे – मथना

व्याख्या – रहीम जी कहते हैं कि कोई बात जब एक बार बिगड़ जाती है तो लाख कोशिश करने के बावजूद उसे ठीक नहीं किया जा सकता। यह वैसे ही है जैसे जब दूध एक बार फट जाये तो फिर उसको मथने से मक्खन नहीं निकलता। कहने का तात्पर्य यह है कि हमें किसी भी बात को करने से पहले सौ बार सोचना चाहिए क्योंकि एक बार कोई बात बिगड़ जाए तो उसे सुलझाना बहुत मुश्किल हो जाता है।

दोहा

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।

जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि॥

शब्दार्थ

बड़ेन – बड़ा

लघु – छोटा

आवे – आना

व्याख्या – रहीम जी कहते हैं कि किसी बड़ी चीज को देखकर किसी छोटी चीज की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए अर्थात् बड़ी चीज़ के होने पर किसी छोटी चीज़ को कम नहीं समझना चाहिए। क्योंकि जहाँ छोटी चीज की जरूरत होती है वहाँ पर बड़ी चीज बेकार हो जाती है। जैसे जहाँ सुई की जरूरत होती है वहाँ तलवार का कोई काम नहीं होता। कहने का अभिप्राय यह है कि किसी भी चीज़ को कम नहीं समझना चाहिए क्योंकि हर एक चीज़ का अपनी-अपनी जगह महत्त्व होता है।

दोहा

रहिमन निज संपत्ति बिन, कौ न बिपत्ति सहाय।

बिनु पानी ज्यों जलज को, नहिं रवि सके बचाय॥

शब्दार्थ

निज – अपना

बिपत्ति – विपत्ति

सहाय – सहायता

जलज – कमल

रवि – सूर्य

व्याख्या – रहीम जी कहते हैं कि जब आपके पास धन नहीं होता है तो कोई भी विपत्ति में आपकी सहायता नहीं करता। यह वैसे ही है जैसे यदि तालाब सूख जाता है तो कमल को सूर्य जैसा प्रतापी भी नहीं बचा पाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि आपका धन ही आपको आपकी मुसीबतों से निकाल सकता है क्योंकि मुसीबत में कोई किसी का साथ नहीं देता।

दोहा

रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।

पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून॥

शब्दार्थ

बिनु – बगैर, बिना

सून – असंभव

व्याख्या – इस दोहे में रहीम ने पानी को तीन अर्थों में प्रयोग किया है। पानी का पहला अर्थ मनुष्य के लिए लिया गया है जब इसका मतलब विनम्रता से है। रहीम कह रहे हैं कि मनुष्य में हमेशा विनम्र (पानी) होना चाहिए। पानी का दूसरा अर्थ आभा, तेज या चमक से है जिसके बिना मोती का कोई मूल्य नहीं। पानी का तीसरा अर्थ जल से है जिसे आटे (चून) से जोड़कर दर्शाया गया है। रहीम का कहना है कि जिस तरह आटे का अस्तित्व पानी के बिना नम्र नहीं हो सकता और मोती का मूल्य उसकी आभा के बिना नहीं हो सकता है, उसी तरह मनुष्य को भी अपने व्यवहार में हमेशा पानी (विनम्रता) रखना चाहिए जिसके बिना उसका जीवन जीना व्यर्थ हो जाता है।

बहु विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1 – रहीम ने प्रेम के बंधन को किसकी तरह कहा है?

- (A) तार
- (B) धागे
- (C) डोरी
- (D) सूत

उत्तर-(B) धागे

प्रश्न 2 – रहीम दूसरों से क्या छुपा कर रखने को कहते हैं?

- (A) दुःख
- (B) धागा
- (C) मजाक
- (D) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(A) दुःख

प्रश्न 3 – रहीम ने एक समय में कितने काम करने को कहा है?

- (A) चार
- (B) दो
- (C) एक
- (D) तीन

उत्तर-(C) एक

प्रश्न 4 – चित्रकूट में कौन रहने गए थे?

- (A) रहीम
- (B) राम
- (C) कृष्ण
- (D) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(B) राम

प्रश्न 5 – चित्रकूट रहने योग्य क्यों नहीं है?

- (A) वह बहुत दूर है
- (B) वहाँ कुछ नहीं है
- (C) वह खण्डार है
- (D) वह बहुत घना वन है

उत्तर-(D) वह बहुत घना वन है

प्रश्न 6 – रहीम के दोहे कैसे होते हैं?

- (A) लम्बे
- (B) बिना अर्थ के
- (C) कम शब्द के
- (D) कम शब्दों में अधिक अर्थ बताने वाले

उत्तर-(D) कम शब्दों में अधिक अर्थ बताने वाले

प्रश्न 7 – किसके जल को धन्य कहा गया है?

- (A) कीचड़
- (B) सागर
- (C) नदी
- (D) तालाब

उत्तर-(A) कीचड़

प्रश्न 8 – किसके जल को व्यर्थ कहा गया है?

- (A) कीचड़

- (B) सागर
- (C) नदी
- (D) तालाब

उत्तर-(B) सागर

प्रश्न 9 – हिरण किससे खुश होकर अपना शरीर न्यूछावर कर देता है?

- (A) संगीत
- (B) इंसान
- (C) गाना
- (D) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(A) संगीत

प्रश्न 10 – दूसरों के प्रेम को देखकर लोग क्या त्यागने को तैयार रहते हैं?

- (A) घर
- (B) सम्पत्ति
- (C) धन
- (D) सब-कुछ

उत्तर-(D) सब-कुछ

प्रश्न 11 – दूध के फटने पर उसका क्या नहीं बनता?

- (A) लस्सी
- (B) घी
- (C) मक्खन
- (D) खीर

उत्तर-(C) मक्खन

प्रश्न 12 – बात के बिगड़ने पर क्या होता है?

- (A) बात फिर नहीं बनती
- (B) बात फिर बन जाती है

(C) बात टाल दी जाती है

(D) बात दोहराई जाती है

उत्तर-(A) बात फिर नहीं बनती

प्रश्न 13 – बड़ी चीज को देखकर किसी छोटी चीज की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, इसका क्या अर्थ है?

(A) बड़ी चीज़ काम की होती है

(B) छोटी चीज़ काम की होती है

(C) हर चीज़ का अपना महत्त्व है

(D) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(C) हर चीज़ का अपना महत्त्व है

प्रश्न 14 – सूई की जगह क्या काम नहीं आता?

(A) तार

(B) धागे

(C) डोरी

(D) तलवार

उत्तर-(D) तलवार

प्रश्न 15 – तलवार की जगह क्या काम नहीं आता?

(A) तार

(B) धागे

(C) सूई

(D) सूत

उत्तर-(C) सूई

प्रश्न 16 – रहीम ने पानी के कितने अर्थ लिए हैं?

(A) दो

(B) चार

(C) पाँच

(D) तीन

उत्तर-(D) तीन

प्रश्न 17 – मनुष्यों के लिए पानी का क्या अर्थ है?

- (A) विनम्रता
- (B) चमक
- (C) जल
- (D) जीवन

उत्तर-(A) विनम्रता

प्रश्न 18 – मोती के लिए पानी का क्या अर्थ है?

- (A) विनम्रता
- (B) चमक
- (C) जल
- (D) जीवन

उत्तर-(B) चमक

प्रश्न 19 – चून के लिए पानी का क्या अर्थ है?

- (A) विनम्रता
- (B) चमक
- (C) जल
- (D) जीवन

उत्तर-(C) जल

प्रश्न 20 – किसके बिना जीवन असंभव है?

- (A) विनम्रता
- (B) चमक
- (C) जल
- (D) जीवन

उत्तर-(C) जल

सारांश

कवि परिचय

कवि – रहीम

जन्म – 1556

रहीम के दोहे पाठ प्रवेश

प्रस्तुत पाठ में रहीम के नीतिपरक दोहे दिए गए हैं। यहाँ दिया गया हर एक दोहा हमारे जीवन की किसी न किसी स्थिति से जुड़ा हुआ है। ये दोहे जहाँ एक ओर इन्हें पढ़ने वालों को औरों के साथ कैसा बरताव करना चाहिए, कैसा व्यवहार करना चाहिए, इसकी शिक्षा देते हैं, वहीं मानव मात्र को करणीय अर्थात् करने योग्य और अकरणीय अर्थात् न करने योग्य आचरण या व्यवहार की भी नसीहत यानि सीख देते हैं। इन दोहों को एक बार पढ़ लेने के बाद भूल पाना संभव नहीं है और हमारे जीवन की विभिन्न स्थितियों का सामना होते ही इनका किसी को भी याद आना लाज़िमी है, जिनका इनमें चित्रण है।

रहीम के दोहे पाठ सार

- प्रस्तुत पाठ में रहीम के ग्यारह दोहे दिए गए हैं, जो हमारे जीवन की किसी न किसी परिस्थिति से जुड़े हुए हैं। पहले दोहे में रहीम जी कहते हैं कि प्रेम का बंधन किसी धागे के समान होता है, जिसे कभी भी झटके से नहीं तोड़ना चाहिए क्योंकि जब कोई धागा एक बार टूट जाता है तो फिर उसे जोड़ा नहीं जा सकता। उसी प्रकार किसी से रिश्ता जब एक बार टूट जाता है तो फिर उस रिश्ते को दोबारा पहले की तरह जोड़ा नहीं जा सकता।
- दूसरे दोहे में रहीम जी कहते हैं कि अपने मन की पीड़ा या दर्द को दूसरों से छुपा कर ही रखना चाहिए। क्योंकि जब आपका दर्द किसी अन्य व्यक्ति को पता चलता है तो वे लोग उसका मजाक ही उड़ाते हैं। तीसरे दोहे में रहीम जी कहते हैं कि एक बार में केवल एक कार्य ही करना चाहिए। एक ही साथ आप कई लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश करेंगे तो कुछ भी हाथ नहीं आता। यह वैसे ही है जैसे किसी पौधे में फूल और फल तभी आते हैं जब उस पौधे की जड़ में उसे तृप्त कर देने जितना पानी डाला जाता है। चौथे दोहे में रहीम जी कहते हैं कि जब राम को बनवास मिला था तो वे चित्रकूट में रहने गये थे। ऐसी जगह पर वही रहने जाता है जिस पर कोई भारी विपत्ति आती है। पाँचवे दोहे में रहीम जी का कहना है कि उनके दोहों में भले ही कम अक्षर या शब्द हैं, परंतु उनके अर्थ बड़े ही गहरे और बहुत कुछ कह देने में समर्थ हैं। छठे दोहे में रहीम जी कहते हैं कि कीचड़ में पाया जाने वाला वह थोड़ा सा पानी ही धन्य है

क्योंकि उस पानी से न जाने कितने छोटे-छोटे जीवों की प्यास बुझती है। लेकिन वह सागर का जल बहुत अधिक मात्रा में होते हुए भी व्यर्थ होता है क्योंकि उस जल से कोई भी जीव अपनी प्यास नहीं बुझा पाता। सातवें दोहे में रहीम जी कहते हैं कि यदि कोई आपको कुछ दे रहा है तो आपका भी फ़र्ज़ बनता है कि आप उसे बदले में कुछ न कुछ दें। आठवें दोहे में रहीम जी कहते हैं कि कोई बात जब एक बार बिगाड़ जाती है तो लाख कोशिश करने के बावजूद उसे ठीक नहीं किया जा सकता। यह वैसे ही है जैसे जब दूध एक बार फट जाये तो फिर उसको मथने से मक्खन नहीं निकलता। नवें दोहे में रहीम जी कहते हैं कि बड़ी चीज़ के होने पर किसी छोटी चीज़ को कम नहीं समझना चाहिए। क्योंकि जहाँ छोटी चीज़ की जरूरत होती है वहाँ पर बड़ी चीज़ बेकार हो जाती है। जैसे जहाँ सुई की जरूरत होती है वहाँ तलवार का कोई काम नहीं होता। दसवें दोहे में रहीम जी कहते हैं कि आपका धन ही आपको आपकी मुसीबतों से निकाल सकता है क्योंकि मुसीबत में कोई किसी का साथ नहीं देता। अंतिम दोहे में रहीम ने पानी को तीन अर्थों में प्रयोग किया है। रहीम का कहना है कि जिस तरह आटे का अस्तित्व पानी के बिना नम्र नहीं हो सकता और मोती का मूल्य उसकी आभा के बिना नहीं हो सकता है, उसी तरह मनुष्य को भी अपने व्यवहार में हमेशा पानी (विनम्रता) रखना चाहिए जिसके बिना उसका जीवन जीना व्यर्थ हो जाता है।